स्नातक 1 , सामान्य हिन्दी (अहिन्दी भाषियों के लिए) के लिए प्रकरण – कबीर का जीवन-परिचय शीर्षक पाठ्य-सामग्री

डॉ मयंक भार्गव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी
एम० एल० टी० कॉलेज,सहरसा

कबीर का जीवन-परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में कबीर एक विलक्षण कवि हैं | उनका व्यक्तित्व अपने आप में अनोखा है | उनका रचना संसार सामान्य से लेकर विशिष्ट पाठकों और श्रोताओं को प्रभावित करता रहा है | उनकी विलक्षण प्रतिभा भारत ही नहीं संसार भर के विद्वानों, शोधार्थियों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है | वह कवि हैं, साधक हैं, दार्शनिक हैं और क्रांतिकारी समाज के निर्माता हैं | उनकी कविता के अनेक रंग हैं | उनकी रचना उनके व्यक्तित्व से जुड़ी हुई है | कबीर की रचनाधर्मिता को समझने के लिए उनके व्यक्तित्व को भी समझना आवश्यक है। कबीर के युग में समाज अनेक जातियों और उप जातियों में बँटा था | अनेक मत मतान्तरों , पूजा-पद्धतियों, कर्मकांडों, साधनाओं, विभिन्न प्रकार के स्वीकार-अस्वीकार में खंडित हो रहा था | ऐसे समय में कबीर का आविर्भाव हुआ | प्राचीन काल में भारत में रचनाकारों द्वारा अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी जाती थी | स्वाभाविक है कि कबीर जैसे साधक-रचनाकारों के जीवन के संबंध में भी प्रामाणिक जानकारी का अभाव है | विद्वानों

के शोध के आधार पर उनकी जीवन यात्रा के कुछ चिह्न अंकित किए गए हैं | कहना न होगा कि कबीर के जीवन के संबंध में जिन तथ्यों की खोज की गई है उन पर विद्वान एकमत नहीं हैं |

कबीर के जन्म को लेकर भी विद्वानों द्वारा विभिन्न बातें कही गई हैं | एक किंवदंती के अनुसार कबीर का जन्म विक्रम संवत 1355 की ज्येष्ठ पूर्णिमा को बताया जाता है | रामानंद दिग्विजय ग्रंथ के अनुसार कबीर का जन्म काशी के लहरतारा तालाब में कमल के पत्ते पर हुआ बताया जाता है | एक मान्यता के अनुसार कबीर का जन्म चैत्र सुदी मंगलवार मृगशिरा नक्षत्र शोभन योग सिंह लग्न में हुआ | कुछ लोग उन्हें प्रहलाद का अवतार भी मानते हैं | स्पष्ट है, इन कथाओं के पीछे इतिहास कम और भावुकता ज्यादा है | ये कथाएँ कबीर को अवतार सिद्ध करने के लिए ज्यादा उत्सुक दिखाई देती हैं। 'कबीर चरित्र बोध' नामक पुस्तक में प्राप्त एक दोहे के अनुसार कबीर का जन्म 1455 विक्रम ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवार को हुआ | डॉ रामकुमार वर्मा इस तिथि की सत्यता गणित के आधार पर स्वीकार करते हैं | डॉक्टर माता प्रसाद गुप्त ने भी संवत् 1455 की जेष्ठ पूर्णिमा को सोमवार होना बताया है | अतः कबीर का जन्म काल विक्रम संवत् 1455 सामान्य रूप से मान्य है |

कबीर के जन्म स्थान को लेकर भी विद्वान एकमत नहीं हैं | डॉ रामकुमार वर्मा कबीर का जन्म स्थान मगहर मानते हैं | डॉ श्याम सुंदर दास ने लिखा है कि कदाचित उनका बाल्यकाल मगहर में ही बीता हो और वह पीछे से आकर काशी में बसे हों | रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी काशी को कबीर का जन्म स्थान बताया है | कुछ विद्वान काशी और मगहर दोनों को एक ही स्थान बताते हैं | इस आधार पर

इतना तय है कि कबीर का जन्म स्थान काशी अथवा काशी के निकट का कोई स्थान था | कबीर की कर्मभूमि तो निश्चित तौर पर काशी ही थी।

मध्यकालीन भारत जातियों और धर्मों में बँटा था | ऐसे समाज में कबीर का आविर्भाव हुआ | प्रामाणिक तथ्यों के अभाव के कारण उनकी जाति और धर्म का निश्चय नहीं किया जा सकता | हिंदुओं के लिए कबीर वैष्णव भक्त हैं, मुसलमानों के लिए पीर हैं | सिख उन्हें भगत मानते हैं तो कबीरपंथियों के लिए वह अवतार हैं | कबीर की रचना के आधार पर उन्हें हिंदू मुस्लिम एकता का समर्थक बताया जाता है | उन्हें एक नए समाज के निर्माण के लिए प्रस्तुत व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता है | कबीर ने अपने को ना हिंदू कहा ना मुसलमान | उन्होंने बार-बार अपने को जुलाहा कहा है। जुलाहा जाति हिंदू और मुसलमान दोनों के बीच है | बाबू श्याम सुंदर दास कबीर का जन्म मुसलमान जाति में होना नहीं मानते | वह अनुमान लगाते हैं कि कबीर किसी ब्राह्मणी या हिंदू स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और मुसलमान परिवार में पालित हुए थे | पर पीतांबर दत्त बड़थ्वाल उनके इस मत से सहमत नहीं | उनके विचार से कबीर जुलाहा वंश में उत्पन्न हुए थे | उनके पूर्वजों ने शायद कुछ समय पहले अपने धर्म को छोड़कर इस्लाम स्वीकार किया था | कबीर की जाति विषयक उहापोह के बीच हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह मत प्रासंगिक है कि कबीर सबसे न्यारे थे | वह हिंदू, मुसलमान ,योगी, गृहस्थ ,साधु, वैष्णव सब थे और इनमें से कुछ भी नहीं थे | वह असंभव परिस्थितियों के मिलन बिंदु पर खड़े थे |

कबीर की जन्म संबंधी कथाओं में यह प्रचलित मान्यता है कि नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति को कबीर मिले थे अतः नीरू और नीमा ही कबीर के माता

पिता माने जाते हैं | कबीर को विधिवत शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं मिला पर बचपन में ही उन्होंने राम नाम को जीवन का सार मान लिया था | बाद में अनुभव जनित ज्ञान से वह सामान्य जनता को ब्रह्म-ज्ञान एवं संसार विषयक ज्ञान अपनी विलक्षण भाषा में देने लगे | कबीर शास्त्रीय ज्ञान को ब्रह्म प्राप्ति का साधन नहीं मानते | वह आँखों देखे ज्ञान को ज्यादा महत्व देते हैं | उनकी पत्नी के रूप में लोई का उल्लेख मिलता है | कुछ विद्वान उनकी दूसरी पत्नी के रूप में धनिया का भी नाम लेते हैं जिसके लिए रमजनिया संज्ञा भी मिलती है | सुश्री उर्वशी सुरती के शोध अनुसार कबीर की एक ही पत्नी थी और उसके तीन नाम थे | धनिया उन्हें उसके माता-पिता कहते थे, लोई शायद उसे दुलार वश कहा जाता होगा और साधुओं ने उसे रमजनिया कहा | कबीर के पुत्र के रूप में कमाल और पुत्री के रूप में कमाली का उल्लेख मिलता है | कबीर का पूरा जीवन संत के रूप में बीता | उनके गुरु रूप में कहीं-कहीं शेख तकी का नाम आता है लेकिन अधिकांश विद्वान रामानंद को ही उनका गुरु मानने के पक्ष में हैं | संभव है कबीर रामानंद के विधिवत शिष्य न हो परंतु उन पर रामानंद का प्रभाव अवश्य था | वासुदेव सिंह के शब्दों में ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर के मानव गुरु रामानंद थे उनसे कबीर को राम नाम का मंत्र प्राप्त हुआ था लेकिन उनके अतिरिक्त कबीर को एक दिव्य गुरु का भी साक्षात्कार हुआ था जो स्वयं परम प्रभु ईश्वर ही थे | कबीर की मृत्यु भी रहस्य के घेरे में है | उनकी आयु 70 वर्ष से लेकर 120 वर्ष तक की बताई गई है | कहा जाता है कि कबीर अपना मृत्यु काल समीप जानकर काशी से मगहर चले गए | हिंदू मान्यता के मुताबिक काशी में मृत्यु मोक्ष प्राप्ति का सूचक है | जीवन भर कबीर ऐसी मान्यताओं , कर्मकांड के विरोध में रहे तो

यह स्वाभाविक लगता है कि कर्मभूमि काशी को मृत्यु -काल में उन्होंने छोड़ दिया हो और मगहर चले गए हों | शोधों के अनुसार विक्रम संवत 1505 में उनका परलोक गमन माना जाता है।